

STANLEY
282

ॐ नमः श्रीपद्मापा रमिता देव्यै ॥ १ ॥
आर्यवेरोचनाख्यं दितयमपि जितं बुद्धमशोभ्यं न
श्रीमद्भक्तोद्भाख्यं सकलमुनिवरं चामितामं सुवीश
आर्यामोघाद्यसिद्धिकलिदुरितहरं गच नामामकीतां
तारंगीयां दुर्गाख्यं प्रणामितशिरसा सर्वदा हं नतोस्मि ॥
॥ १ ॥ ॐ नमः श्रीपद्मापा रमिता देव्यै ॥ ॥ या सर्व

ज्ञतयान इत्यु वशमं शोतेर्विणः श्रावकान् ॥
यामार्गज्ञतया जगद्धितकृता लोकार्थसंपादिका
सर्वाकारमिदं वदन्ति सुनयो विश्वं यया संगतान् तस्यै
श्रावक बोधि सत्त्वगणिनो बुद्धस्य मात्रे नमः ॥ १ ॥
नमः श्री आर्या वलोकितेश्वराय ॥ ॥ बुद्धं नमामि
ततं वरपद्मपाणिः मे आत्मकं गगनगंजं समंततमर्द्धं ॥ य

श्राधिर्पपरहितोद्यतमं जुघोषं विष्कंभिनंशितितनुं च न
मेखगर्भं ॥ १ ॥ श्रीमंजुश्रीगुरुवे नमः ॥ ॥ शश
धरमिव श्रुभुं खड्गपुष्पांगपाणिः सुरुचिरमतिशान्तं प
चवीरं कुमारं पृथुतरवरमोक्षं पद्मपत्रायताक्षं कुस
निदहनदक्षं मंजुशोषं नमामि ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ तुलसीदासः सर्व
संकलसर्वसुखासंपूर्णचंद्रवदनातुल्य
नयनसर्वहृदयनमस्कृतो धर्मसूक्तिमार्गदर्शक
कृपाविर्भूतः स हि भगवान्मा ॥ १ ॥ ॐ
नमोः सर्वलक्षणकपालवकुलः प्रकाशक

हि स तु वाचविवाहदंतेऽपि प्रभुनिधयं
दं च वाक्यमपाहि मूर्धन्यं सर्वनाम
सि ॥ २ ॥ आलाधनकनकजलविह्वलिता
गमनकयजतविह्वलितवाचवर्धन
किना वलधवायसुवकुवकु नमस्तपाहि

एद गुरु इद न मा मि ॥ ३ ॥ कला कना थु म
लो रुत म म थु या ज ग म प्र वि रु स प च ल स
फ ना उ वि ना म मि प्र व ल रु न ल गि त ग थि रु
प म पा मि रु ति सु र क रु न मा मि ॥ ४ ॥ व
हो न या मि व ल हा मि न सु र स हा स हा ज प
क ति मि ला न म म ग सु हा म म क रु प थ म

म ल उ का थि मा ग ति प म पा मि रु ल मा ग रु द
न मा मि ॥ ५ ॥ ग रु ती च उ न म न क रु अ वि
वि म मं मि ति रु रु ति दि मि रु रु रु रु रु रु
म रु न ला ल रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
म पा मि न रु का मी रु रु न मा मि ॥ ६ ॥ रु रु रु
रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु

क. कनसीनः तपस पाणि. ह न रश्मि सन्तः न जना
मि ॥ १॥ गली कडन अजि न प मना ह न प
ने म कना अ म ह वं क न सर्व सलः दुःख न व
न व जा मि वि म कि द ४ र्कः तपस पा नि ह न
क ड कि नं न मा मि ॥ ८ ॥ वं पु न लो क ग न ठ
क न स व ४ वं स वि न व ५ उ ल प र्क न जि ह म
न ५ ५ ५ व पि द ग ल उ न दि ला तु म ५ ५ न प म

पा नि तु लना स क नं न मा मि ॥ ५ ॥ म दा द ह
ऊ इ द पि डा न पु न स ला सं वि य न क न ॥ ह
सर्व न व दि हि ॥ पु नि स वि न ह न तु क हि म
तु जाना तपस पा नि ह न तु क तु षा न मा मि
॥ १० ॥ ग ली ग नं तु व न व व डि न च ड थु
र्य वि न मा मि डि डा वि न न ल प ला व ला सः न

जकु. जाकुसुगमो. चउमो न धाम्. तप मपाहि
नमहउमक. नन सासि ॥ ११ ॥ गन्हां चऊनमि
हधामना जयसुडादेव न कुलमनरुजपि
उपाठं चमक था न पादिनं हि न दानव द
नैप मपाहिवलु धाम द द न सासि ॥ १२ ॥ ग
लं चऊन दिवि क उरदवपु उ दान स्यहि

गहुड विंदि तदुष मं चरुया चयति बहुवि
हि त/रिद्धि जले जय मपाहि चनकुधि क ज
नसासि ॥ १३ ॥ गरु का सपरप विदसं नवका
कसिहि का साव स नपपि ज नवका कु सि
हि या गह विरु पवि व कि न ध म वि न
नैप मपा सि व ह न प थ ज न सा सि ॥ १४ ॥

विमलितमकमि कागिसमरुहवैतुः गसां
चकननमविपमनस्यचनिनिममविनैद्य
नयसमपपददीतधमैतं पमपासिभ्रवि
चपिधुंनमासि ॥ १७ ॥ इहकमार्दिपिस
नवनरुपूहि इहवृद्ध एवकयापिदिनरुव
सहाध्यायि विविहविहिहसमदिनलन

पमपासि वलकाचरि कनमासि ॥ १८ ॥ वा
जाहुरा कुरुपमस्यवजनैडकुमजन
पजिनीहयजाकुसिहिभ्रमिनपीवनवा
गमहासमरुतं पमपासिजिनमृकुराय
नमासि ॥ १९ ॥ नैयानुर्कनरुमजासिविम
किहृद्वैजानासुसमाधिपजिपूरुविदि

मम नमं तं कं क पतिवसुं ति ब्रह्म कस्तुतः तं
 प न पातिः ॥ यन्मा एक र्जन मासि ॥ १८ ॥
 नाना ह्येवं कं कस्तुतः कस्तुति विष्कि द्यं जात
 एदं दवय जात सुबीय त नैन आ वि सागदि
 अस्तु दल जाति द कस्तुतः कं कस्तुतः पानिः ब्रह्म
 यच दं द न मासि ॥ १९ ॥ ॥ यथा ह्येवं कस्तुतः

पिसावदां किं निजं आपतिव्याधि हयकुं
 लविज्ञाग इह तं वीजाग कसुव हपायवि
 नासयनिः तं पपाहि हयनासक वं न
 मि॥ २० ॥ भुक्तवृत्ति नियम यम्मेऽम्मा
 यपासं यस्मिन् कर्तुं हयवृत्त चयि सर्वपिनं
 जिज्ञास्यः स पाषाणयं तं पपाहि वलु

यसुदांनमासि॥ २१ ॥ नितुवसुनचन
समधिः यागवषुनामडुपतिलकयैककमा
लिजातेः चम्पाकदागादिउपपदसाधितमि
नैपयमासि नितुज्जदसुयानमासि॥ २२ ॥
दर्वकथयवर्नैजसर्वमिगसुगंधवैज
कामानदानवः वैदिनसुजकफलागामन

श्रीचवनेनमासुः गायमपाहितमपि
चगजधनमकजामि॥ २३ ॥ यप्रथंगि
कप्रक्षमवतिशुकाजसामिचपुकीच
थनवृत्तिकामासायविहगिवहविपु
विशयलागिपययामिकालेनविपुर्ण
नैलाकक्षयै॥ २४ ॥ तृताकयामिजवि

यन्नास्य किं जातो दिग्वचववृष्टासमन्
सम्यक् दस्यप्रविष्ट हयपापकिनास्यकि
तुष्यीतु दवसमन्तवया कसिहि ॥ २१ ॥
श्रुतिश्रामरुप्रिभ्राणविलाकि नस्य
वंधूदह भ्राचार्यनंवित्रं वित्रं कं कं
तव गीतं कथासम्पाद ॥ २२ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical passage. The text is written in black ink on aged, yellowed paper. The script is a mix of standard Devanagari characters and some stylized or variant forms. The text is arranged in five lines, with some characters appearing to be part of a larger, possibly multi-syllabic, word or phrase. The overall appearance is that of an old manuscript or a page from an antique book.

10
[Illegible handwritten text in Devanagari script, likely a continuation from the previous page. The text is written in a cursive style on aged, yellowed paper.]

[Illegible handwritten text in Devanagari script, continuing the text from the previous page. The script is consistent with the one on the top page, showing signs of age and wear.]

282

北 漢

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ राजविमल ॥ १ ॥
अ. ज ये नं मो विरि ॥ १ ॥ भगवत नं वि
निवन् सविज्ञा क ॥ १ ॥ ॥ वृहन्ना नं वप
ये का न. स र स ति. व स ना ये का ॥ अ. लं
क पर रा प्र जु क थ र. ध न जा ला ये का

विज्ञा क ॥ १ ॥ वासुदेव पंथा नं गाय
का. अग्नि देव पुन थ न का. वृहन्ना नं
स ना ग र जा. जल धार हा ये का विज्ञा
क ॥ २ ॥ महा देव दै स र था ये का. नारा
ये नं स व पु ये का. ज न रा जा. दं दु जो न का

कं: दंदिन लाये का विज्या कं ॥ ३ ॥ दि हं
द्वं रं रुये का: भि दु ग नं च क लं मा य
का: आ का स नं: सान वा ग्य का व: आ नं
उ नं दि ज्य क ॥ ४ ॥ न इ ति म: ग्या न क
रु द को ज न: सहित न: सै ष ना ग या: रु

स वि ज्य से: पु षा भा व रु या व ॥ ५ ॥
वन ग म: र त लार: श्री रु ति स हार ज
का क रु अ ना थ ज न: गु र या के स
र न व या न गु रु ज ये स मे: सि रि: व
य भ ग वा न रु ति नि व न स वि ज्य क ॥ ६ ॥

ॐ नमो श्री लोकांथाय ॥ १ ॥

उं नमो श्री लोकांथाय ॥ १ ॥ ॥ कहे
पाल परवत को सल सल पादिल. ॐ
अमितांभ सिले अप पाना ॥ अरु न
या वरुन वरु हे रामोति. पाल लल सः
जा जो ल्येमा न वस चौ न ॥ १ ॥ लोक

स्ये न फेना वल थया गु हि वि लो हि
न जित हना. पर सन पु ये पाल. ल वर
जि पा वि रा खाल. चौ न न्ये गु हाल
यै हालः श्री भाने थारि श्री लो के स
र ॥ १ ॥ सलि. ल स थो या वि नं धि

लया चो न ह्यसि तु काल तरे यान्ति वि
॥ १ ॥ अने २ वेदे के ना नाना उपकार
याना मध्य लजित उपकार ॥ ३ ॥ य
नं हि न सु मलया अने दे लया के भ
गति या ना ॥ ॥ जित थुलि दया मद्द

वेः शुगु दुष पुन कि स हल पाल हल
व ना आसा नंत या भलो सान ॥ ४ ॥
अग्नि या अंबल र निपति श्री ज ये वि
राज रो रा ज्य प उप का स मल ॥ ५ ॥
कल या दे हल ल नि हल स या पुन

दत्तलाल ये त्वत्कृत्वा दया ॥ ५॥

۱۱ ۳۰ ۱۱ ۷ ۱

ॐ नमो ब्रह्माय ॥ ॥ नमो ब्रह्माय ॥
 लं नंदको ग्या न शुद्धि ॥ ॐ ॥ नमो
 जि पात्रवे ल संभ्र न फल स धाई न ये

निये. षल्ललपे. भूव से थो ऊँ क ॥ १॥

मोहमलमनमलो. मोहमोहदा नवि
हो: मोहमनलिकया. व. म. नवि ये स्वे

॥ २ ॥ वा नला क निदि व स्य न

तये मये रे: का गो लमि बानं सो से

वसे कश्चि सोव ॥ ३ ॥ गितवागिणि
राज्ये. अतिन सत्तेले. गुर्वे जुलुसां
दुर्वे. दास सफुये मगा क ॥ ४ ॥
वपासा. थुल्लिष. विचा यत्ता. सोव
रे. स्वया जिन. थुल्लिष. अतिनसि

साक ॥ ५ ॥ लातले जामाणि प. व.
मलाका. दुयायेरे. लाक. व. स्व. व. पा
ना. सनलि. स्व. व ॥ ६ ॥ लातले जा.
कोने मडु. गधिं न थोसं साल. ये य
येथे. पालसा. के. लोक याव न न सा

ले ॥ ७ ॥ ने पा लया दू न पत्रि विरि
 रच का हा दुर प्रजा पतिं पार या हो
 विष्णु हू न मात ॥ ८ ॥ २०३ ॥
 श्री भिम हो न हा हाय न मो नु हो ॥
 उष उर सुष पुर स कल ये क मो न

॥ अथ ॥

ॐ कृति स्वत मे रवं नीमनाथ अम्मे
॥ १ ॥ हिलमनुकभुषणाः स्वपि कि
रन उज्ज्वलः सन्नि के ना थकु दः सवन
लो हे मज्जी ॥ २ ॥ लाल अति सुंदर
अमरि स व लो चं रां कौ ति स्वरी जोति स

कृष्णालमाला भज्ये ॥ ३ ॥ दशै हा सिग
जा. धरत रिपु. ना सकल दुल्लि दुख जो ध
ने. ॥ ४ ॥ जो हे भज्ये ॥ ४ ॥ अहं नै फल
कै: अंग का नै ग हे भज्ये दुस दा सकल
जुम पु कारो भज्ये ॥ ५ ॥ हा हा दुख दु

र शुभ पु. सकल ये क मो च नै ॥ ६ ॥ धर
॥ ६ ॥ जो नै भुत भै र वें भि स ना थ भज्ये
॥ ६ ॥ सा इ के नै क वर नै दुय ति सा
इ के नै क वर सा. दु र पी ति सा इ के नै
भगत सकल को भुक्त ल दि. के कि

॥ ७ ॥ श्री ॥ कृष्ण ॥ श्री ॥ ८ ॥
 श्री नमो नमो नमो नमो ॥ श्री ॥
 श्री नमो नमो नमो नमो ॥ श्री ॥
 श्री नमो नमो नमो नमो ॥ श्री ॥

गुंगिल पुपया कु नंदको गुनला
 हांक वयलि सपुर तका ॥ अदि ॥
 अने अकाज नथा से नै ना बो ने ॥
 असखः २ वा नो या व क त त ट र न
 सडु हा हा क वयलि सपुर तका ॥

॥ ४॥ हे गुरु मि पाक स्यः त न नं प्रहि
चास्येः मा मा प्र ति पि क या व धु सा स
न सा हा कः व य लि स पू त का व ॥
४॥ ध्रु उः कि लिः क लः का स्येः सि च
म या कः का स्येः स ल चा ता वा स्ये स न

अ नः लुं म ग पा कः व यो लि स पू त का व
मि म स्ये न र स ता दि जा क ॥ ४॥
अ नः लुं स ल स्ये रां फ य थो वि ना त
वा टः छि पा लि नि पा य को ल वि त जि
त वा हा सः व यो लि स पू त का व फ को

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अदिष्टं धनं
सकाल्ये आहविष्या येः नमो बुधना
सकाल्ये आहविष्याये ॥ ॐ महा

रथराजपुत्र महासत्त्वनामदनीपर
भातउपकारवृक्षरसनिहिता
वनजुरुवागरसथो नः वागिनिष्ठा
होः ह्यदे वागिनिष्ठः महाफलः
स्वरगाः ॥ भातिवृक्षनामकः १॥ ३

आर्याय म नः माया दको तोल ता
नः थवगुजि व दा नविल २ चंदे थंदे
धका थाल वला निसू महा देव
आका स न हे हा दे आका स न स्वा
रा वा गा का व हलः ॥ आ दि १ ॥ २ ॥

उ व न स न दु भु लं कर गा ण थ नि
ज लं जय न मे वु थ दे व थाल २ अ
ग्या शि नै कृ ण त या क र जो रि वि न
तिः स ह स हे हा दे स ह स वि न ति या
नाः आ दि वृ थ ना म का से आ रा ति